अमृत पुरुष गौतम

मगध जनपद में गोब्बर नाम का एक छोटा-सा सुन्दर गाँव था। यहाँ गौतम गोत्रीय वसुभूति नाम के महापण्डित रहते थे। इनकी पत्नी का नाम था पृथ्वी। माता पृथ्वी के तीन पुत्र थे–इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति। एक बार पण्डित वसुभूति प्रातःकाल जब मधुर स्वर में पाठ कर रहे थे–तो तीनों पुत्र उनके सामने बैठकर तल्लीनतापूर्वक सुनने लगे।

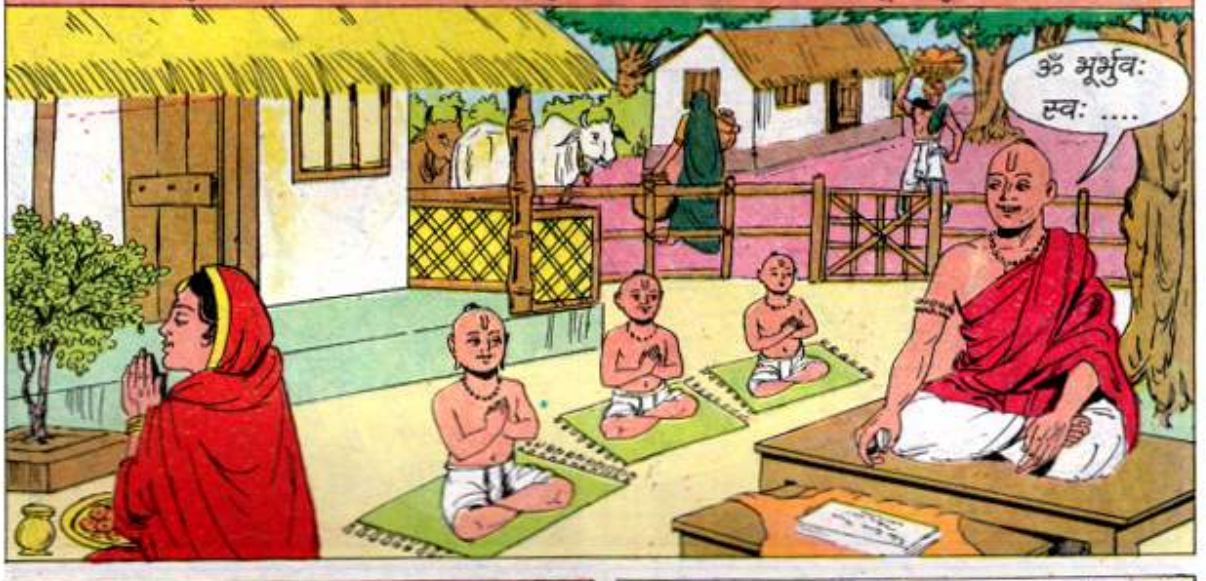

मंत्र सुनकर इन्द्रभूति ने वापस उसे उच्चारित किया–

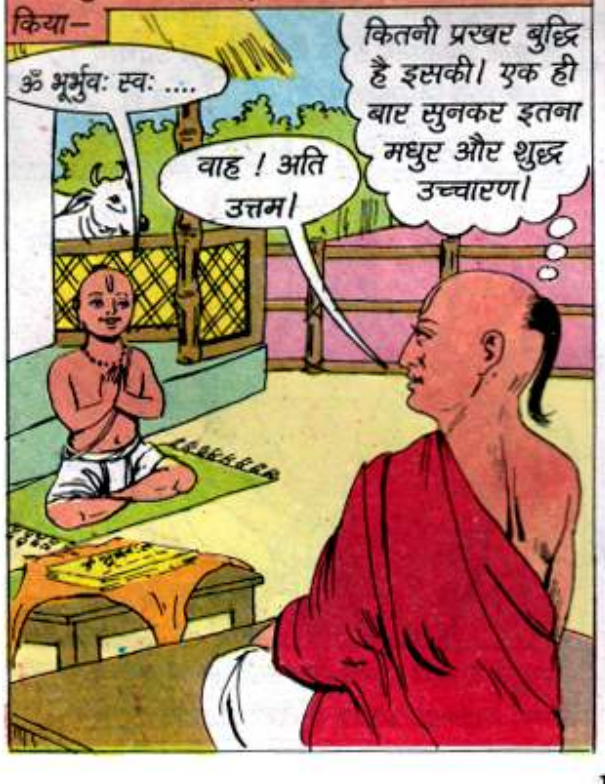

तभी पास में पूजा करती हुई माता पृथ्वी भी वहाँ आ गई। वसुभूति ने कहा–

महापण्डित वसुभूति अपनी पत्नी पृथ्वी की बात सुनकर प्रसन्न हो गये।

किशोर अवस्था आने पर वसुभूति ने अध्ययन के लिये तीनों पुत्रों को गुरुकुल में भेज दिया। गुरुकुल के शान्त वातावरण में तीनों भाई अन्य छात्रों के साथ अध्ययन करने लगे।

बारह वर्ष बाद गुरुकुल के आचार्य तीनों छात्रों को लेकर वसुभूति के पास आये-

विप्रवर ! आपके पुत्र चार वेद, चौदह विद्या आदि की शिक्षा में पारंगत हो चुके हैं, परीक्षा ले लीजिए।

आर्य ! मुझे विश्वास है, आपके पास शिक्षित-दीक्षित ये छात्र विद्वत् समाज में अपनी कीर्ति-पताका अवश्य फहरायेंगे।

परन्तु विप्रवर ! इनकी अद्भुत मेधाशक्ति देखकर मेरा तो मन कुछ और ही कहता है।

क्या? ऐसी क्या विलक्षणता है इनमें?

मेरे पाँच सौ छात्रों में इन्द्रभूति सर्वश्रेष्ठ छात्र रहा है। मुझे लगता है यह अपनी ज्ञान-रश्मियों से एक दिन सम्पूर्ण भारत को प्रकाशित करेगा।

आपका आशीर्वाद सत्य हो आचार्य !

वसुभूति ने वस्त्र, स्वर्ण-मुद्रा आदि से आचार्य का सम्मान किया। जाते-जाते आचार्य ने तीनों को आशीर्वाद दिया।

कुछ समय पश्चात् माता-पिता का देहान्त हो गया। तीनों भाई गुरुकुल चलाने लगे। धीरे-धीरे तीनों बन्धुओं की विद्वत्ता की प्रसिद्धि दूर-दूर तक हो गई।

अरे भाई, सुना है गोब्बर ग्राम निवासी महापण्डित इन्द्रभूति तो साक्षात् सरस्वती-पुत्र है, वेदों और समस्त विद्याओं में पारगामी है।

सैकड़ों विद्यार्थी दूर-दूर से ज्ञान प्राप्त करने के लिये उनके पास आने लगे।

गुरुदेव ! हम अवन्ती से आये हैं। हमें अपना शिष्य बना लीजिए।

विप्रवर ! मैं विद्याध्ययन हेतु बंग से आया हूँ।

इस प्रकार कुछ ही समय में तीनों बंधुओं के विद्या-केन्द्र विशाल विद्यापीठ बन गये। जहाँ पाँच-पाँच सौ ब्रह्मचारी छात्र विद्यार्जन करते रहते।

एक दिन सोमिल नामक एक धनाढ्य ब्राह्मण बहुत से उपहार लेकर महापण्डित इन्द्रभूति के पास आया।

मैं पावा निवासी आर्य सोमिल, महापण्डित इन्द्रभूति को प्रणाम करता हूँ।

पधारिये आर्य सोमिल आपका स्वागत है।

आर्य सोमिल ने अपने आने का प्रयोजन बताया–

पण्डित प्रवर ! मैं एक विराट् यज्ञ का आयोजन करना चाहता हूँ, जिसमें सम्पूर्ण पूर्वांचल के प्रमुख विद्वान् ब्राह्मणों को निमंत्रित किया जाये और तीन दिन तक ज्ञान-गोष्ठियाँ चलें।

और इस यज्ञ के प्रमुख सूत्रधार आप ही रहेंगे।